आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye Weekly No. 288 | ARYA SABHA MAURITIUS | *1st June to 15th June 2014*

आत्मा के दो अजर पक्ष

ओ३म् इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ, याभ्यां रक्षांसि अपहंस्यग्ने ।
ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं, यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ।।

यजु० १८/५२

ATMA KE DO AJAR PAKSH

LES DEUX AILES IMPERISSABLES DE L'AME

Om Imow té pakshāvajarow pat trinow, yābhyām rakshānsi apahansyagné.
Tābhyām patéma sukritāmu lokam, yatra rishayo jagmuha prathamajāha purānāha.

Yajur Veda 18/52

Glossaire / Shabdārtha :

Agné, Agni – le feu, les sages ou les grandes âmes, **Té** – ton, **Imow** – ce, **Ou** – nous aussi, **Ajarow** – immortel, immuable, qui ne change jamais, éternel, impérissable, **Patatrinow** - qui vole très haut, qui atteint le plus haut niveau du progrès ou de la perfection, **Pakshow** – comme les deux ailes d'un oiseau ou comme les deux aspects d'une chose – le pour et le contre, le côté positif et le côté négatif – le vrai et le faux, soumis à votre discernement, **Yābhyām** – Avec lesquelles vous ……, **Rakshānsi** – (i) les méchants, les malfaiteurs, les criminels, les escrocs, les démons, les monstres, les gens sans scrupules. (ii) les défauts, les vices, les mauvaises habitudes, les comportements répréhensibles, **Apahansi** – vous repoussez, vous rejetez, vous méprisez, vous chassez de toute force, **Tābhyām** – de ces mêmes ailes, de ces mêmes attitudes, de ce même élan, **Yatra** – où, le plaisir avec lequel ….., **Sukritam lokam** – le monde merveilleux de ceux qui accomplissent des actions nobles, leur bonheur, ou leur satisfaction pour l'aboutissement de leur objectif.

Prathamajāha – nos aînés qui nous ont précédés, ont été reconnus pour leur humanisme, leur spiritualité et leur maîtrise des enseignements des Vedas, **Purānāha** – vieux, **Rishayāha** – les sages, les ascètes, les génies, les érudits, les prodiges, **Jagmuha** – ceux qui atteignent toujours ……, Patéma – volons aussi haut que possible, réalisons beaucoup de progrès, de succès et de bonheur. ***cont. on Pg. 4***

N. Ghoorah

Mauritian visit of Professor Bhim Singh, eminent Sanskrit Scholar from Kurukshetra University (22 – 31 May 2014) achieve

Born within a family with outstanding erudition in Sanskrit and Vedic philosophy, Prof. Bhim Singh passed out the Vedālankar as a gold medallist from the Kāngri Gurukul University, He thereafter moved to Kurukshetra University, Haryāna where he bagged the gold medal for M.A (Hindi and Sanskrit) and completed his PhD (Sanskrit). His continued effort positioned him among the very few distinguished scholars who qualify for D. Litt., the highest degree conferred by a university.

His father and mentor, Acharya Vidyanidhi Shastri was a Sanskrit scholar who held various posts as prāchārya (director of studies) at several gurukuls in North India. Commonly tagged as a mobile library his advice was often sought as an authority in the interpretation of the Vedic texts and Vedic Sanskrit.

I first met with Prof. Bhim Singh in April 2013 during a conference on "Indology: Solving the problems of globalisation" under the aegis of the Department of Pāli and Prāchi Vidyā of the Kurukshetra University. That same department has been the

launch pad from where Prof. Bhim Singh has, as of date, authored several books, articles and some 70 research papers, attended over 50 national and international conferences on Sanskrit, as well as successfully guided numerous students in their research work toward M. Phil and PhD degrees. ***cont. on Pg 4***

सम्पादकीय

सत्य-विद्या का भंडार

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सभी ग्रन्थों में 'सत्यार्थ-प्रकाश' एक सर्वोत्तम ग्रन्थ माना जाता है । मानव समाज को सत्य और असत्य का सही विवेचन करने के लिए उन्होंने इस महान ग्रन्थ की रचना की है। महर्षि जी ने जीवन पर्यन्त असत्य को कभी स्वीकार नहीं किया। वे सदा अज्ञान के घोर अंधकार से दूर हटाकर मानव मात्र को सत्य-विद्या प्रदान करते रहे, पाप कर्मों से बचाते रहे और सही मार्ग दर्शन कराते रहे।

सत्यार्थप्रकाश सत्य-विद्याओं का एक ऐसा भण्डार है जो हमें एक आदर्श पुरुष बनकर जीवन व्यतीत करने के लिए आलोकित करता है। हमें हर प्रकार के अज्ञान, अंधकार, अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा पापों से अलग रहने का उपाय बताता है। सारे दुर्गुणों को हटा कर धर्मानुसार जीने की शिक्षा देता है। इस सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ का हर समुल्लास सत्य विद्या का कोष माना जाता है।

महर्षि जी के कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' का सही ज्ञान हासिल किए बिना सत्यासत्य की परख करना बड़ा कठिन है तथा सच्चे ईश्वर की पहचान करना असम्भव है। इसीलिए सत्य विद्याओं को ग्रहण करने के लिए महर्षि जी ने बड़ी सुगमता के साथ सरल भाषा में इस ग्रन्थ को रचा है, जिसे पाठक बड़ी आसानी से पढ़कर सत्य और असत्य की पहचान कर लेते हैं।

युगपुरुष देवर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त ग्रन्थों को पढ़कर हम अद्भुत ज्ञान तो ग्रहण करते रहते हैं, मनन-चिन्तन करके अपनी बौद्धिक शक्ति की वृद्धि करते हैं। उनकी रचनाओं का अध्ययन करके सर्वांगीण विकास कर रहे हैं और आने वाला युग भी करेगा। उनकी अद्वितीय रचना सत्यार्थप्रकाश तो प्रत्येक काल में जय-जयकार होगी। क्योंकि यह ग्रन्थ तो सर्वहितकारी ग्रन्थ साबित हो चुका है, इसीलिए इसका अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है और हिन्दू के अलावा अन्य जातियाँ भी इस ग्रन्थ का अध्ययन बड़ी रुचि के साथ करती हैं और प्राप्त विद्याओं से अति प्रभावित हो जाती हैं।

सत्यार्थप्रकाश का पाठ पढ़कर हमें अति आनन्द होता है। इस ग्रन्थ की कथा सुनकर श्रोतागण मुग्ध हो उठते हैं, वे बारंबार सुनने के लिए ललायित होते हैं, साधारण व्यक्ति की समझ में भी सत्य विद्या की जानकारी आ जाती है, क्योंकि यह सत्य-ज्ञान का भण्डार है। बच्चे, युवक, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी राजा-प्रजा सभी लोगों के लिए यह ग्रन्थ शिक्षाप्रद है। इस सर्वोत्तम ग्रन्थ का अध्ययन गहराई से करना हर व्यक्ति का परम कर्तव्य है।

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती आगामी १२ जून को है, इस ग्रन्थ की जयन्ती बड़ी लगन के साथ आयोजित करनी चाहिए। हर शाखा समाज की ओर से भव्य आयोजन करके पठन-पाठन, प्रवचन आदि का पूरा प्रबन्ध करना चाहिए। हर शाखा समाज की ओर से भव्य आयोजन करके पठन-पाठन, प्रवचन आदि का पूरा प्रबन्ध करना चाहिए। सभी पाठशालाओं में रोचक, आकर्षक और शिक्षाप्रद विषयों पर सत्यार्थप्रकाश की चर्चा करनी चाहिए ताकि छात्रगण प्रभावित हो उठे और इसे पढ़ने के लिए उत्साहित हो जाए।

आर्यसभा के तत्वावधान में तथा समस्त शाखा समाजों की ओर से जून महीने में सत्यार्थप्रकाश के पठन-पाठन, अध्ययन, कथावाचन के साथ ही रेडियो के माध्यम से कई कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनके द्वारा देशभर में इस महान् ग्रन्थ का महत्व आम जनता को प्राप्त हो सके।

सत्यार्थप्रकाश मास के अन्तर्गत सभी पंडित-पंडिताओं, प्रचारकों, शिक्षकों और धार्मिक जनों से आग्रह करते हैं कि आप विशेष रूप से जून महीने के अन्त तक विशेष रूप से सत्यार्थप्रकाश की सत्यविद्याएँ फैलाते रहे। महर्षि जी ने बड़े तप-त्याग, अन्वेषण, तर्क-वितर्क और सत्यासत्य को परख कर इस श्रेष्ठतम ग्रन्थ की रचना की है, हमें भी बड़ी तन्मयता पूर्वक सत्यार्थप्रकाश का गहरा अध्ययन करते रहना चाहिए और अपनी संतानों की इस सत्यज्ञान के भण्डार में गोता लगाने की प्रेरणा देनी चाहिए ताकि वे आर्य पुत्र बनकर अपना जीवन उज्ज्वल बनाने में सफल हो सके।

पाठकों को यह ध्यान रहे कि 'सत्य' को प्रकाश का प्रतीक माना जाता है और 'असत्य' घोर अंधकार माना जाता है ।

बालचन्द तानाकूर

सत्यार्थप्रकाश मास

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मोरिशस

लो, फिर से एक बार जून का महीना आ गया। हमारे लिए, आर्य समाजियों के लिए सत्यार्थप्रकाश मास है। इस महीने के दौरान हम सत्यार्थ प्रकाश शीर्षक महान् ग्रन्थ का प्रचार करते हैं। इसी महान् कालजयी ग्रन्थ ने तो हमारे देश में आर्य समाज की स्थापना करने की प्रेरणा दी। यदि १८९८ में सत्यार्थप्रकाश की चन्द प्रतियाँ न आतीं तो शायद आर्यसमाज की स्थापना का उपक्रम ही नहीं होता। न खेमलाल लाला को सत्यार्थ प्राप्त होता, न दलजीतलाल को पढ़ने के लिए देता और न जगमोहन गोपाल पढ़ता। तीनों ने पढ़कर विचार किया और परिणाम स्वरूप ओकूले क्यूर्पिप रोड में आर्य समाज की स्थापना होती। हाँलांकि १९०३ वाला आर्य समाज बहुत समय तक नहीं चला फिर भी शुरू हो गया। फिर से बनता रहा बिगड़ता रहा लेकिन अन्त में १९१० में बन ही गया और आज टापू भर में छाया हुआ है। इतिहास रच दिया गया और आज प्रगति पर प्रगति होती जा रही है।

सत्यार्थप्रकाश एक कालजयी ग्रन्थ है। कोई माग्नम ओपूस (Magnum Opus) नाम देता है तो कोई धार्मिक विश्वकोष के नाम से अभिभूत करता है। लेकिन हम कहते हैं सत्य के अर्थ का प्रकाश है। जैसे सूरज का प्रकाश परमात्मा करता है इसी प्रकार सत्य का प्रकाश केवल परमात्मा कर सकता है। हम तो केवल सत्य के अर्थ का प्रकाश करता है। इसी लिए स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश नाम दिया (लेकिन अंग्रेज़ी वालों ने बस सत्य का प्रकाश रख दिया (Light of Truth) (Lumiere de la verite).

यह पुस्तक लिखी गई थी १८७४ ई० में उस प्रथम संस्करण में इतनी गलतियाँ छप गयी थी कि जब स्वामी जी को वह प्रति प्राप्त हुई तो उन्होंने खुद अपने हाथ से उसको संशोधित करके छपवाने हेतु प्रेस में भेजा पर जब छपकर प्रकाश में आया तो स्वामी जी का निर्वाण हो गया था। वही संशोधित प्रति आज तक विभिन्न संस्करण छपते आ रहे हैं। उसी का अनुवाद अंग्रेजी में किया था डा० चिरंजीव भारद्वाज जो मोरिशस आये थे और यहाँ के अपने प्रवासकाल में अनेक शाखा समाजों की स्थापना की जिनकी शताब्दियाँ मना रहे हैं और आने वाले दिनों में मनायेंगे।

यहाँ पर स्मरण करने का विषय यह है कि उनके ठहराव के दौरान उनको पता चला कि अंग्रेजी शासन की ओर से प्रतिनिधि सभा का पंजीकरण नहीं हो रहा था। मोरिशस की ब्रिटिश सरकार को मालूम हो गया था कि भारत में पंजाब प्रतिनिधि सभा लोहे का चना चबवा रहा था इस लिए उसी डर से यहाँ पंजीकरण करने से मना कर रही थी। पर सूरज को बादल कब तक घेर कर रखता। आखिर बादल छँटता है और सूर्य अपना प्रकाश बिखेर ही देता है। डा० चिरञ्जीव ने आर्य समाज वालों से प्रतिनिधि नाम बदल कर परोपकारिणी नाम से पंजीकृत करवा दिया और उसी नाम से विख्यात हुआ। यह दूसरी बात है कि फूट पड़ जाने से आर्य समाज दो दल में बंट गया और पूरे पच्चीस वर्षों तक दो नामों से काम करते रहे। अन्त में, पचास के वर्षों में दोनों एक दूसरे में विलीन होकर आर्य सभा रखा जो आज तक उसी नाम से जाना जाता है।

आज पिछले लगभग पैंसठ वर्षों तक बढ़-चढ़कर कार्य हो रहा है । भगवान् करे ऐसा ही होता रहेगा और सत्यार्थप्रकाश मन्तव्यों का प्रचार दिन-दुनी रात चौगुनी होता रहेगा ।

विदाई समारोह

एस. प्रीतम

शनिवार दि० ३१ मई २०१४ को दोपहर २.३० बजे पाई में डी.ए.वी. डिग्री कोलिज में भारत के कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर भीमसिंह जी की भावभीनी विदाई दी गयी। वे डी.ए.वी. डिग्री कोलिज के अनेक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आए हुए थे। वे अपनी औपचारिक ज़िम्मेदारी निभाते हुए अपने १० दिन के अल्पकाल में मोरिशस के दर्शन किए जाते वक्त उन्होंने कहा कि वे मोरिशस की जनता के आवभगत से बहुत ही ज़्यादा प्रभावित हुए। वह उनकी हमारे यहाँ पहली यात्रा थी।

कार्य का संचालन सभा महामंत्री ने किया। मंत्र-पाठ एवं भजन नवोदित भजनोपदेशक युवक हिमेश और साथियों द्वारा हुआ।

डी.ए.वी. डिग्री कोलिज कमिटि के प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर द्वारा स्वागत भाषण हुआ / बीच बीच में आर्य सभा प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर एवं उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू द्वारा बारी बारी से उपस्थित जनों को सम्बोधित किया गया।

प्रो० भीमसिंह को आर्य समाज की शिक्षा धरोहर में मिली है उन्होंने ऐसा कहा। मौक़े पर सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर प्रकाश डाला।

सूचना
परीक्षा बोर्ड

अध्यापक/अध्यापिकाओ,

सेवा में सविनय सूचित हो कि इस साल **सैद्धान्तिक एवं छठी की परीक्षाएँ** निम्न तारीख को ली जाएँगी-

सिद्धान्त प्रवेश और सिद्धान्त रत्न - शनिवार ९ अगस्त २०१४ *(Saturday 9 August 2014)*

छठी कक्षा - शनिवार १६ अगस्त २०१४ - (Saturday 16 August 2014).

कृपया अपने छात्रों को तैयार कीजिए। नोट – (क) पहली की पुस्तक आर्य सभा में उपलब्ध है। भविष्य में दूसरी और तीसरी की पुस्तकें आ जाएँगी । (ख) आवेदन फोर्म आर्य सभा में उपलब्ध है - आर्य सभा और अपने निरक्षक से संपर्क स्थापित करें।

धन्यवाद

प्र. जीऊत, प्रधान परीक्षा बोर्ड

गतांक से आगे

कन्या-रत्न

डा० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

ओ३म् ।। स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ।

ऋग्वेद १.५६. ३

आभूषु – इसका अर्थ है – सुशोभित होना। कन्या को अलंकार से परिपूर्ण होना चाहिए। अलंकार दो प्रकार का होता है। एक बाह्य और दूसरा आभ्यन्तर। बाह्य अलंकार में सोना, चांदी, कपड़े आदि आते हैं । इनसे अलंकृत होना आसान है। यह अलंकार सामान्यतया सभी के पास होता है। दिखावे के अलंकार तो सभी के पास होते हैं। आभ्यन्तर अलंकार गुणों से होते हैं। सहृदयता, सद्भावना, सत्यज्ञान, सद्बुद्धि, सद्विवेक, धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, प्रभु-भक्ति प्रभु-विश्वास, आदि सबसे बड़े अलंकार हैं। महाराज भर्तृहरि ने और भी गुण बताये हैं, जैसे – विपत्ति में धैर्य, उन्नति में शान्ति, सभा या समूह में वाणी की चतुरता, युद्ध में जाना पड़े तो वीरता, यशस्वी बनने की अभिलाषा आदि। यशस्वी बनने का अर्थ प्रसिद्ध होना नहीं है, इसका अर्थ ऐश्वर्यशाली होना है। सद्गुणों से यश की प्राप्ति ही यशस्विता होती है। इन गुणों से मानव सबका दिल जीत लेता है विद्या तथा ज्ञान जहाँ से भी मिले, उसे ले लेने की आदत बहुत अच्छी मानी जाती है। इस प्रकार जो आन्तरिक अलंकारों से परिपूर्ण होता है, वही दूसरों को आनन्द-प्रदान करता है।

रामयन् – अर्थात् आनन्द प्रदान करना। वही अपने जीवन को सफल बना सकता है, उसी को निश्चय से सुख की प्राप्ति हो सकती है, जो अपने परिवार को आनन्द प्रदान कर सकता है।

नि दामनि – यानी निश्चयतः सुखदायक । जीवन का नाम ही सुख है। जो दुःख में जीता है, उसको समय काटना कहते हैं। वेद हमें **'शरदः शतम्'** की भावना प्रदान करता है। शरद ऋतु, धन-धान्य, सौम्य-शान्ति, आनन्द को प्रदान करनेवाली मानी जाती है। अतः हम सब अपनी आयु को निकालना नहीं, जीना चाहते हैं। यह सब परिवार पर निर्भर है, परिवार स्त्री जाति पर निर्भर है, क्योंकि पुरुष तो अधिक समय तक बाहर ही रहता है। उसे उत्तम जीवन संगिनी चाहिए। उत्तम जीवन संगिनी तभी मिलेगी, जबकि उत्तम कन्या का निर्माण होगा। अतः माता-पिता को घर में उत्पन्न होनेवाली कन्या का सत्कार करके उसे उत्तम संस्कार युक्त बनाना होगा। यह तभी सम्भव है, जब माता-पिता स्वयं सभी सद् गुणों से युक्त हों।

वेद का उपदेश है कि कन्या अपने गुणों के अनुरूप वर से विवाह करे। यदि पुत्री को रत्न माना गया है तो पुत्र को हीरा। हीरे को तराशने की आवश्यकता होती है। तराशते समय सावधानी अत्यन्त आवश्यक है, नहीं तो टूट भी सकता है, खराब हो जायेगा। पुत्र और पुत्री के निर्गुण में समान रूप से ध्यान रखना चाहिए, तभी उत्तम वर-वधू दृष्टिगोचर होंगे।

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

ESSAY COMPETITION

SATYARTHA PRAKASH MONTH (JUNE 2014)

TO : 1) Secretaries, Arya Yuvak Sanghs/Arya Samajs/Arya Mahila Samajs
2) Rector, Secondary Colleges / Schools

To mark the Satyartha Prakash Month (2014), the Arya Sabha Mauritius is organizing an essay competition in (i) Hindi, and (ii) English as follows :

CATEGORY : ABOVE 12, NOT EXCEEDING 15 YEARS BY 14.07.2014
Word Count : AROUND 700-800
Title [English] : Satyartha Prakash guidelines on education.
Title [Hindi] : सत्यार्थप्रकाश में निर्धारित शिक्षा पद्धति

CATEGORY : ABOVE 15 YEARS, NOT EXCEEDING 20 YEARS BY 14.07.2014
Word Count : AROUND 1500-1800
Title [English]: The contribution of the Satyartha Prakash towards the (i) physical, (ii) Spiritual and (iii) social uplift of mankind
Title [Hindi] : शारीरिक,आत्मिक और सामाजिक उन्नति में सत्यार्थ प्रकाश का योगदान
Closing date : 14 July 2014

Cash prizes for each category & language :

1st prize	Rs 5,000.-
2nd prize	Rs 3,000.-
3rd prize	Rs 2,000.-

Instruction to participants :

1. Essays should be written/ word processed on A-4 paper, recto (one side only).
2. Participant should write their (a) names, (b) date of birth and (c) address on a separate sheet.
3. Envelopes should be marked **ESS-COM/SP/2014** on the top left hand corner.
4. Essays should reach The Secretary, Arya Sabha Mauritius, 1 Maharishi Dayanand Street, Port Louis by Monday **14 July 2014 at 3.30 pm** the latest.

Note : • *Arya Sabha Mauritius reserves the right not to hold any competition following this advertisement.*
• *The winners' names and essays will be published in the weekly newspaper "ARYODAYE".*
• *Special 15% discount on all Satyartha Prakash books available at Arya Sabha Mauritius.*

H. Ramdhony
Secretary

सामाजिक गतिविधियाँ

क्लेरफ़ों समाज में स्थापना दिवस

एस. प्रीतम

क्लेरफ़ों आर्य समाज मंदिर में रविवार दि० २७.०४.१४ को धूमधाम से नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। मौक़े पर आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर दोनों उप-प्रधान डा० उदयनारायण गंगू, श्री सत्यदेव प्रीतम, मान्य प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर, महा मंत्री श्री हरिदेव रामधनी, उपमंत्री श्री रविन्द्र गौड जो प्लेन विलियेम्स ज़िला परिषद् के प्रधान हैं सभी उपस्थित थे। बिरले ही किसी प्रांतीय समारोह में इतनी संख्या में अंतरंग सदस्य अपनी उपस्थिति देते हैं।

कार्यारम्भ यज्ञ द्वारा हुआ। अप्पर प्लेन विलियेम्स के वरिष्ठ पुरोहित राजेन सिराज और लोवर प्लेन विलियेम्स के पुरोहित महादेव जी के साथ पुरोहित मितू एवं क्लेरफों आर्य समाज के जिम्मेदार पुरोहित खेदू जी। यज्ञ के तत्काल बाद बच्चों द्वारा एक-दो कार्यक्रम पेश किये गए जिनकी तैयारी कुमारी धनपत द्वारा हुई थी। पंडित महादेव की मंडली द्वारा भी रोचक भजन पेश किए गए ।

प्लेन विलियेम्स परिषद् के प्रधान के लघु स्वागत भाषण के बाद लगातार भाषणों एवं सन्देश की बारी आयी जिसमें — श्री सत्यदेव प्रीतम, डा० उदयनारायण गंगू, श्री हरिदेव रामधनी, श्री बालचन्द तानाकूर तथा पं० यशवन्तलाल के भाषण हुए। सभी ने एक स्वर में कहा कि स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज की स्थापना से दुनिया की भलाई हुई और आज लोग विद्या के प्रकाश में जी रहे हैं।

अन्त में सोनालाल रामदोस के धन्यवाद समर्पण के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

हिन्दी पाठशाला की स्वर्ण जयन्ती

रविवार ता० ०४.०५.२०१४ को दोपहर २.०० बजे काँ फ़ूक्रो आर्य समाज शाखा नं० ९७ की हिन्दी पाठशाला की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई। राष्ट्रपति माननीय राजकेश्वर प्रयाग जी जी.ओ.एस.के., जी.सी.एस.के. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति देकर स्वर्ण जयन्ती की महत्ता बढ़ा दी। वे क़रीब तीन घण्टे बैठे रहे और अन्त में एक प्रभावशाली भाषण दिया। उपस्थित लोगों को समझाया कि आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अथक परिश्रम किया और आज भी उसके चलाने वाले थके नहीं हैं वर्तमान सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

राष्ट्रपति की पत्नी भी कार्य की समाप्ति तक बैठकर सभी भाषणों और बच्चों एवं महिला समाज की सदस्यों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों का आनंद लेती रहीं ।

आर्य सभा के प्रधान श्री तानाकूर जी, माननीय प्रधान डा० निऊर, दोनों उपप्रधान डा० गंगू और श्री प्रीतम महामंत्री रामधनी के साथ दूर-क़रीब से आए हुए गणमान्य लोगों ने कार्य को सफल बनाने में भाग लिया।

राष्ट्रपति जी ने स्वर्ण जयन्ती के मौक़े पर जो विशेषांक निकाला गया था उसका लोकार्पण किया ।

विविध विद्वानों के कर कमलों द्वारा बच्चों को प्रमाण पत्र और पारितोषिक वितरित किये गये ।

प्रोग्राम की समाप्ति पर सभी लोगों को जल-पान से सत्कार किया गया । उत्सव बहुत सफल रहा ।

फोरेस्ट साईड आर्य समाज की ५७ वीं वर्षगाँठ

गत रविवार दि० ४ अप्रैल २०१४ को प्रातःकाल ९.०० बजे देर्बी, फोरेस्ट साईड आर्य समाज की ५७ वीं वर्षगाँठ मनाई गई। मौक़े पर श्री सत्यदेव प्रीतम आर्य सभा के उप-प्रधान को मुख्य अतिथि बनाया गया था। उनके साथ सभा के और तीन अंतरंग सदस्य उपस्थित थे – डा० उदयनारायण गंगू, श्री राजेन रामजी और प्लेन विलियेम्स के प्रधान श्री रविन्द्र गौड और राष्ट्रीय सभा के मिनिस्टर मायकेल सिकयेन और विरोधी दल के डा० सतीश बुलेल और स्टीव ओबिगाडू ।

बारी बारी से रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये जिनमें महिलाओं द्वारा वेद मंत्र और चन्द योगासन की मुद्राएँ प्रस्तुत की गई, स्कूली बच्चों द्वारा भजन और गणमान्य विद्वानों द्वारा भाषण हुए।

शाखा द्वारा किये जा रहे स्तुत्य कार्यों का उल्लेख किया गया। समाज की गतिविधियों से सभी लोग प्रसन्न थे।

याद रहे कि बढ़ते हुए कार्य कलापों को देखकर जगह की तंगी है, छत के ऊपर २,५०० क्षेत्र फल का एक दो मंज़िला जोड़ा जा रहा है। इसके लिए आर्थिक सहायता की ज़ोरदार माँग की गई।

परिवार दिवस पर शिविर

३०, ३१ मई और १ली जून को तीन दिवसीय सेमिनार रखा गया था। स्थान था श्रीमती एल.पी. गोविन्द्रामेन वैदिक सेन्टर, यूनियन वेल त्रवा बुचिक।

शुक्रवार ३० मई, को ४.०० से ५.०० बजे तक पँजीकरण हुआ। ६.०० से ७.०० बजे तक अग्निहोत्र से कार्यारम्भ हुआ। ७.०० से ८.०० बजे तक भोज हुआ जो प्रतिभागियों द्वारा लाया गया था। शुक्रवार की गतिविधि ८.०० - ९.०० बजे तक परिवार के महत्व और भूमिका पर कार्यक्रम चला।

अगले दिन शनिवार ३१ मई को ५.०० बजे तक तड़के सभी को उठाया गया । ५.०० से ६.०० बजे तक पूरे घण्टे भर मौन धारण किया गया। ठीक साढ़े सात से साढ़े आठ बजे तक अग्निहोत्र रखा गया था जिसमें सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय भाग लिया। फिर नाश्ता लिया गया और नाश्ते के बाद पहले सत्र के दौरान परिवार में आध्यात्मिकता के महत्व पर श्री सतीश बिहारी द्वारा सम्बोधन हुआ । पूरे एक घण्टे के बाद आराम की आवश्यकता थी। दूसरे सत्र में विषय रखा गया था - - परिवार में सामूहिक प्रार्थना डा० राजा द्वारा हुई। ठीक बारह बजे मध्य दिवस का भोजन लिया गया जिसे शेमें ग्रेनियें महिला समाज के सौजन्य से प्राप्त हुआ था। भोजन के पश्चात् तीन सत्र चले (१) स्वास्थ्य पर डा० राधाकिसुन द्वारा (२) सुखी परिवार पर प्रो० सुदर्शन जगेसर और (३) अग्नि-होत्र के बाद बाग़ी परिवार द्वारा प्रदान भोजन ।

६.०० से ७.०० बजे तक आर्य सभा के मानेजर राज सोब्रण ने प्रबन्धन (Management) पर शिक्षाप्रद वक्तव्य दिया।

२०.०० - २१.०० बजे तक – उपविषद् पर आचार्य विरजानन्द और सभा मंत्री हरिदेव रामधनी के खोजपूर्ण प्रवचन हुए।

वार्षिकोत्सव रामसरूप रामगति वैदिक विद्यालय

डॉ० जयचन्द लालबिहारी, एम.ए., एम.एड, पी.एच.डी

शनिवार १०.०५.२०१४ दिन के १०.०० बजे आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में रामसरूप रामगति वैदिक विद्यालय के प्रांगण में पाठशाला का २० वाँ वार्षिकोत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया गया।

यह उत्सव देश के उपप्रधान मन्त्री श्री अनिल कुमार बेचू जी, जी.ओ.एस.के की अध्यक्षता में मनाया गया। उस अवसर के दूसरे विशेष अतिथि इस प्रकार थे : पी.पी.एस माननीय धीरजसिंह खामाजीत, आर्य सभा के मान्य प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर, उपप्रधाना श्रीमती धन्वन्ती रामचरण, उपमन्त्री डा० जयचन्द लालबिहारी, उपमन्त्री श्री प्रभाकर जीऊत, प्रांत के निरीक्षक श्री ईश्वर जीवन, हिन्दी संगठन की मन्त्री श्रीमती अंजू घरबरण, कोषाध्यक्ष श्री हनुमान दुबे गिरधारी, श्री अजामिल माताबदल, श्री रघुबर - मुख्याध्यापक आदि।

विद्यालय के सामने सुन्दर ढंग से बनाया गया था। शामियाना पाठशाला के विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों, अतिथियों, स्कूल के अध्यापकों तथा कमिटि के सदस्यों से खचाखच भरा था।

उत्सव का शुभारंभ कक्षा ५ के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रार्थना से हुआ। तत्पश्चात् विद्यालय समिति के प्रधान श्री ईश्वरलाल रामखेलावन द्वारा स्वागत भाषण हुआ। सभी विशिष्ट अतिथियों को शाल तथा पुष्प गुच्छों से स्वागत किया गया।

आर्य सभा का प्रतिनिधित्व करते हुए डॉ० निऊर जी ने अपने सारगर्भित भाषण में धार्मिक शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए हिन्दी शिक्षण तथा उसके प्रचार-प्रसार में आर्य सभा की अहम् भूमिका को रेखांकित किया। श्रीमती रामचरण ने भी अपने भाषण में छात्रों को हिंदी पढ़ने को प्रेरित किया और मंत्री जी को उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया। श्री खामाजीत जी ने भी लोगों को संबोधित किया।

विशिष्ट अतिथि माननीय श्री अनिल कुमार बेचू जी ने हिंदू एकता तथा हिंदी भाषा के महत्व पर अपना भाषण केंद्रित किया। उन्होंने छात्र-अध्यापक अनुपात - Pupil-Teacher ratio तथा संस्कृत शिक्षकों के लिए अलग से भत्ते संबंधी माँग पर ध्यान देने का आश्वासन दिया । उन्होंने बलपूर्वक प्रश्न रखा कि एकजुट होकर माँग करने से क्या नहीं मिल सकता। इस बात पर सभी उपस्थित लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से अपनी प्रशंसा अभिव्यक्त की। भाषणों के बीच बीच छात्रों को अतिथियों के कर-कमलों द्वारा प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक वितरित किए गए।

छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम बहुत ही रोचक रहे। इन प्रस्तुतियों में पाँचवीं कक्षा की छात्रा सर्वेशा रामपरसाद द्वारा प्रस्तुत नारी की वर्तमान स्थिति पर slam वार्षिकोत्सव का चरमबिंदु था। उसने इस प्रस्तुति से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया था। यहाँ यह बताना समीचीन होगा कि हाल में हिंदी संगठन द्वारा आयोजित ॾ्ऋ्ॾ्श्ृ प्रतियोगिता में सर्वेशा प्रथम घोषित की गयी थी। यह उपलब्धि हिंदू एडुकेशन ओथोरिटी का माथा ऊँचा कर देती है। इसके लिए रामगति वैदिक पाठशाला को कोटिशः बधाई । ध्यातव्य है कि सर्वेश को उसकी अध्यापिका सुलक्षणा निथालिया ने तैयार किया था। उस अवसर पर २०१३ की लोरियेट Laureate कुमारी तानीश्टा मंगर तथा डॉ हेमकेश मोतिया को सम्मानित भी किया गया ।

उस उत्सव का कार्य संचालन बख़ूबी से निभाया गया विद्यालय के मंत्री श्री लखनलाल मोतिया द्वारा, उनको भी बधाई। अंत में स्कूल के प्रबंधक के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् सभी लोगों का जलपान से सेवा सत्कार किया गया।

हिन्दी संघठन / Hindi Speaking Union

आठ मई २०१४ को भारतीय सभागार में Slam / महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमनियम मोरिशस के विभिन्न स्कूलों के छात्रों ने इस स्लाम प्रतियोगिता में भाग लिया।

अंतिम चरण में देश की सर्वश्रेष्ठ छात्रों ने भाग लिया। रामसरूप रामगति आर्यन वैदिक एडड स्कूल की प्रतिभागी **कुमारी सर्वेशा रामप्रसाद** को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

उसकी अध्यापिका सुलक्षणा नितालिया ने छात्रा को तैयार किया था।

सरवेशा ने अपनी पाठशाला का नाम रोशन किया। स्लाम कविता का शीर्षक था 'नारी'।

सरवेशा को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। उसने 'स्त्री उद्बोधन' पर अपनी प्रस्तुति केंद्रित की, पुरस्कार में सरवेशा को चार हज़ार रुपये, कुछ पुस्तकें और प्रमाण-पत्र मिला।

R. Ramgutty A.V.A. School एक Souvenir (शील्द) मिला।

ज. लालबिहारी

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,पी.एच.डी
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,पी.एम.एस.एम,
आर्य रत्न
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,पी.एम.एस.एम
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Mauritian visit of Professor Bhim Singh, eminent Sanskrit Scholar from Kurukshetra University (22 – 31 May 2014) achieve

cont. from pg 1

Humility is his strength. In the preface to the Hindi rendering of the Mahābhāshya Prof. Bhim Singh writes: "I do not claim credit for this work... I admit that my knowledge is very limited as compared to our rishis (Vedic seers of yore)... The Almighty and all-knowledgeable GOD has been and is the source of inspiration for this work... *nimittmātram bhava savyasāchina..* I consider it as a blessing to serve the purpose of adding to the knowledge propounded by the seers... I have put up my utmost effort to expand on the social and scientific aspect in this work... I admit my limitations as compared to the knowledge ingrained in the sutras..." The author has abundantly supplied citations form the Vedas and ancillary *ārsha granthas* (Vedic literature). His expertise and skill are evident throughout the work.

Prof. Bhim Singh reached Mauritius on Thursday 22 May 2014. The next day he addressed a social gathering at the Mahebourg Arya Samaj Mandir on the occasion of Mothers' Day and a reception to some 50 student delegates from India who attended a conference on Quality Circles. He emphasised on the need to go back to our roots where Mothers' Day is neither the business of traders nor a one day lip-service. The ancient Vedic knowledge calls on us to perform *Pitri Yajna*, i.e. be at the service of living parents and elderly persons daily. Another edict spells out *'mātri devo bhava, pitri devo bhava,* āchārya devo bhava' i.e. parents and teachers are marvellous / divine beings. They are the potter who moulds the clay in the making of mankind.

He recorded three audio programmes at the Mauritius Broadcasting Corporation (MBC) which reached the population through our national radio channels. He spoke on (i) the scientific aspects of Vedic Sanskāras in the physical, spiritual and social development of the individual, (ii) the relevance of our ancient tradition of *pitri yajna,* i.e. daily care towards our elderly as part of our *nishkāma sevā* (selfless service) and (iii) the importance of prayers in our life by expounding on verse 22.22 of the YajurVeda *(Om ā brahmana brāhmano brahmavarchasi jayatāma...)* which highlights the universality of Vedic hymns. He also visited the National Archive at the Mahatma Gandhi Institute (MGI) pertaining to the arrival of Indian immigrants to Mauritius.

At a book launching ceremony held by the Hindi Lekhak Sangh at the Arya Sabha, Port Louis on Saturday 25 he expressed his gratitude to those who by their writings have recorded history as well as kept Hindi as a lively language in the island. He gave various hints to the audience on writing skills with focus on creativity.

On the occasion of Mothers' Day, at the Triolet Arya Samaj Mandir, Prof. Bhim Singh focused on family values as the cement to bond intergenerational relationships as well as the advantage of extended families whereby growing children inherit Sanskāras which would enable them to be solution-oriented in their lives. Today's concept of nurseries for children and old-age homes for the elderly is a incongruent solution... do we really wish that our children grow only on food and leisure... and in return send us to homes when we would grow old? The āshram vyavasthā, i.e. living the various stages of life as per the scriptures would leave no room for strained intergenerational relationships.

As guest speaker during the finals of the PowerPoint competition held by the Hindi Speaking Union at the MGI, he depicted the scientific aspect of Sanskrit grammar which is the root for computer programming as well as the most computer-friendly language; Sanskrit being the only language where phonetics and writing are in harmony. The ancient Vedic knowledge including Sanskrit grammar as expounded by our seers empowers us with a reaction time beating super computers in calculations. The memory development / brain usage of the person increases with the study of Sanskrit grammar whereas we need to add parts to increase memory and speed in a computer. Sage Panini, he added, is rightly referred as the first in the lineage of computer gurus.

Addressing the participants during a seminar at the L.P. Govindramen Vedic Centre, Trois Boutiques, Union Vale Prof. Bhim Singh emphasised on the need to stick to our ancestral values as landmarks for consolidating links within the family and society. The global village as promoted nowadays is based only on give and take and monetary gains whereas the concept of *'Vasudaiva kutumbakam'* i.e. the world is but one family is built on a platform where we share the common noble ideals of Dharma (virtue.)

The DAV Degree College held a farewell gathering at the Pailles Educational Centre / Pailles Arya Samaj Mandir. That event was also linked with the opening ceremony of the Satyārtha Prakāsh mās (month) by Arya Sabha Mauritius. Prof. Bhim Singh expanded on the beauty of the creativity of words in Sanskrit and cited over 25 names of God as referred in the first chapter of the Satyārtha Prakāsh. Through a PowerPoint presentation, he gave the details of the language structure and grammar which Maharishi Dayānand had revived and empowered him to conclude the meanings of these names - an indeed enriching experience for the audience.

In his farewell address Prof. Bhim Singh thanked the President and members of DAV Degree College and Arya Sabha Mauritius as well as all those who had directly or indirectly helped in making such a short visit memorable. He will always cherish the natural beauty of the island, the organic friendship and ties that cropped up during his various interactions, the warm welcome extended to him throughout the nooks and corners of the island from the layman to the President of the State. He wished all well and hoped that the guidance provided to the DAV Degree College and Arya Sabha Mauritius would help them to attain new heights.

During his short visit in Mauritius Prof. Bhim Singh had interacted with the President and members of DAV Degree College and Arya Sabha Mauritius, Hon. Mookhesswur Choonee, Minister of Arts & Culture, the President and members of the Hindi Speaking Union, the President and members of the Hindi Lekhak Sangh, the Chairman of the MGI. He also paid courtesy visits to H.E. Shri Rajkeswur Purryag, GCSK, GOSK, the President of the Republic of Mauritius and Hon. Anil Bachoo, GOSK, Vice Prime Minister, Minister of Public Infrastructure, Land Transport & Shipping.

Bramha Deva MukundLall
Darshan Yog MahāVidyālaya
Aryavan, Rojad, Gujarāt, India

cont. from pg 1

आत्मा के दो अजर पक्ष

ओ३म् इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ, याभ्यां रक्षांसि अपहंस्यग्ने ।
ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं, यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ।।

यजु० १८/५२

ATMA KE DO AJAR PAKSH

LES DEUX AILES IMPERISSABLES DE L'AME

Om Imow té pakshāvajarow pat trinow, yābhyām rakshānsi apahansyagné.
Tābhyām patéma sukritāmu lokam, yatra rishayo jagmuha prathamajāha purānāha.

Yajur Veda 18/52

Interprétation / Anushilan

Dans le contexte de ce mantra/verset du Yajur Veda la connotation d'Agni (le feu) est attribuée aux grandes âmes / aux sages. Ceux-ci, de par leurs qualités exceptionnelles et leur attitude d'abnégation, sont aussi puissants et bienfaisants qu'Agni' par leurs apports à l'humanité toute entière.

Leur dévotion / **'Upāsnā'** (en Hindi) apporte une touche de rationalité, d'équité et d'excellence aux deux qualités essentielles suivantes qu'ils doivent acquérir :

(i) **Gyān** (en Hindi) La connaissance / le savoir qui comprend :
(a) Leur connaissance du monde matériel par leur éducation dans tous ses aspects.
(b) Leur connaissance dans le domaine de la spiritualité :- la pratique du yoga, la maîtrise des enseignements des Vedas, des Upanishads, des Darshan – Shastras (la philosophie), les Brahman – Granths et d'autres livres sacrés.
(ii) **'Karma'** (en Hindi) / les actions

Pour les grandes âmes, leur capacité intellectuelle basée sur la spiritualité, les inspirent toujours d'initier des actions avec beaucoup de discernement. Ils ont à surmonter tous les obstacles dressés en leur chemin par des méchants ou des malfaiteurs, et ils doivent à tout prix ne pas succomber aux tentations, aux vices, et à la passion, et ne pas céder aux pressions exercées de toutes parts.

Ainsi, par la bénédiction du Seigneur, ces grandes âmes jouissent d'un pouvoir hors de l'ordinaire. Leurs deux atouts principaux qui sont **'Gyan'** et **'Karma'** leur procurent comme si deux ailes invincibles qui les aident à voler très haut dans la vie. Elles les guident à l'apogée de la gloire pour les faire atteindre le bonheur suprême voire la félicité éternelle ou 'Param Anand' / 'Moksha' en Hindi.

N'oublions pas que, dans ce monde, nous, les êtres humains, sommes tous des âmes, et le Seigneur nous a pourvu d'une enveloppe mortelle voire d'un corps physique ou matériel pour que nous puissions accomplir nos karmas et récolter ses fruits en conséquence.

De ce fait, nous avons tout le droit légitime d'aspirer au bonheur suprême dans le vie, c'est-à-dire, à doter nos âmes de ces deux ailes divines, puissantes et impérissables afin de voler aussi haut que possible à travers la culture de 'Gyān' et de 'Karma' et avec le soutien sans faille de notre dévotion / 'Upāsnā' (en Hindi).

Ces deux ailes divines nous emmèneront au monde merveilleux qu'atteignent de toute éternité les âmes qui accomplissent des actions nobles, et toutes les grandes âmes qui nous ont précédés sur cette terre, en d'autres mots, nos aînés, célèbres pour leur humanisme, leur spiritualité, leur sacrifice, et leur maîtrise des enseignements des Vedas et autres 'shastras' (les écritures saintes).

Hail to Shri Narendra Modi, the new Prime Minister of India

Indradev Bholah Indranath, P.B.H.

"Victory over oneself has more importance than that of the victory over the whole world." Dr. Rummun

Winning the election with absolute majority undoubtedly is the most striking and historical event for the greatest democratic country of the world, that is India.

The Bharati Janta Party (BJP) Leader Shri Narendra Modi defeated his principal adversary, advancing in votes over 5 lakhs establishing a record in his constituency Varodara, Gujrat. Unprecedented victory indeed Aged 62 Shri Modi ji is considered as the architect of the development which took place in Gujrat during the passed 13 years under his leadership. It is also noted with satisfaction that no major incidents happened during the long election campaign or on the voting days.

After the proclamation of the results the principal Senior Partner of Shri Modi, Shri Lall Krishna Advani said. 'It's the end of the dynastic rule' and the people proclaimed saying 'India is Modi, Modi is India'.

The BhajPa leaders like Lalkrishna Advani, Rajnath Singh, Sushma Swaraj won the election with large majority votes but unfortunately, one of the principal candidates of BJP Shri Arun Jaitey lost the election.

Shri Narendra Modi being a politician is also well cultured. Just after the proclamation of the results of his victory, he went home to meet his old mother seeking her blessings. He bowed his head and touched her feet according to the Hindu customs. The mother kissed his fore-front very affectionately and emotionally bestowed her blessings on him.

Gujrat is the birth place of that great social reformer and founder of Arya Samaj Swami Dayanand and that of the father of the nation Mahatma Gandhi and now emerged the great politician Shri Modi in the same motherland Gujrat.

The people of Indian origin living in many parts of the world are proud of the investiture of Shri Modi as Prime Minister of India. Our Prime Minister Hon. Navinchandra Ramgoolam had sent his congratulations to Shri Narendra Modi ji and seized the occasion at the same time inviting him to Mauritius. Modi ji has promised to pay us a visit on an auspicious occasion.

We, the Mauritians too particularly, the Arya Samajists, send our warmest best wishes to Hon. Narendra Modi ji for plenty of success in his career as Prime Minister of India. Hope that during his tenure of office till 2019 India will know unprecedented progress in every walk of life.